उपसंहार

उपसंहार

पत्रकारिता सामाजिक दृष्टि से आदर्श और व्यवसायिक रूप से यथार्थ है। पत्रकारिता क्या है और किस तरह होती है, सच कहा जाए तो यह बात एक पत्रकार जनता तो है परन्तु बता नहीं सकता। पत्रकारिता में रहते हुए भौतिक जीवन की उपलब्धियों को प्राप्त करना सरल नहीं है। समाज का एक ऐसा व्यवसाय जिसमें व्यक्ति को थोड़ा कुछ प्राप्त करने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। अतः एक पत्रकार को हमेशा सक्रीय और सचेत रहना पड़ता है, निरंतर श्रम पत्रकारिता की प्राथमिक मांग है।

पत्र-पत्रिकाओं ने आज इतनी प्रगति कर ली है कि पूरी इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया आधुनिकता में जी रहा है। समाचार पत्रों और चैनलों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। उनका प्रसार भी बढ़ रहा है। पत्र-पत्रिकाओं के कलेवर बदल रहे हैं। आधुनिकता के परिवेश में पत्र-पत्रिकाएं सनसनी और उत्तेजना के पीछे भाग रही हैं ताकि उत्तेजित करती सामग्रियों को पाठकों को परोसकर अपनी व्यावसायिकता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। जनता की भावनाओं को परिष्कृत करना, सामाजिक बुराइयों, विद्वेष, प्रतिहिंसा का प्रतिरोध, समाज में व्याप्त प्रतिगामी और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से जन-मानस को सावधान करना। समाज को हिंसा से दूर कर अपने विवेक, नैतिकता और सद्भावना का संचार करना इत्यादि के अपेक्षा बिकाऊ सामग्री को परोसने में लगी हैं। कुछ पत्र-पत्रिकाएं इसका अपवाद भी हैं। वह जन-भावना के अनुकूल काम कर रही हैं। प्रेमचंद जी द्वारा शुरू की गई पत्रिका 'हंस' एवं राजेंद्र यादव द्वारा पुनर्प्रकाशित पत्रिका 'हंस' के माध्यम से दिखा दिया है कि हिंदी में समानांतर या वैकल्पिक पत्रकारिता कैसे संभव हैं। 'गिफ्ट कल्चर' के इस दौर में जनता की आकांक्षाओं को ध्यान रखते हुए प्रतिबद्ध पत्रकारिता का निर्वाह करने वाली कुछ पत्र-पत्रिकाएं ऐसे ही प्रतिबद्ध व्यक्तित्व के कारण आज भी अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रही हैं। जिसमें राजेंद्र यादव की भूमिका एक राजहंस की रही है।

हिंदी पत्रकारिता के विकास का इतिहास राष्ट्रीय पुनर्जागरण, स्वाधीनता संग्राम, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, कठोर तप, संघर्ष, त्याग और बलिदान का इतिहास है। पत्रकारिता

को आगे बढ़ाने के लिए प्रारंभिक हिंदी पत्रकारों ने कठिन संघर्ष किया। हिंदी पत्रकारिता के विकास के आरंभिक काल में इतनी समृद्धि नहीं थी।

व्यवसायिक पत्र-पत्रिकाएं बुद्धिजीवी वर्ग के नए क्रांतिकारी विचारों के लिए मंच नहीं बन सकती थी, इन्हीं परिस्थितियों के कारण छोटी पत्रिकाओं का जन्म हुआ। साहित्यिक पुनरूत्थान के साथ ही साथ सांस्कृतिक जातीय अभीप्सा छोटी पत्रिकाओं की विशेषता रही हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रिकाओं 'कविवचन सुधा' (1867 ई.), 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (1873 ई.), 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' (1874 ई.) ने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में नया आयाम जोड़ा। 1900 ई. में शुरू हुई 'सरस्वती' ने भाषा, साहित्य और संस्कृति के विकास को ही अपना लक्ष्य बनाया तो 'सार सुधानिधि', 'कर्मवीर', 'मतवाला' जातीय चेतना की भूमिका को ये पत्र-पत्रिकाएं राजनीतिमुखी होने के बावजूद भी भाषा-साहित्य, संस्कार एवं संस्कृति के विशेष समर्थक थे। प्रेमचंद के संपादन में प्रकाशित 'हंस' (1930 ई.) को तत्कालीन साहित्यकारों का भरपूर सहयोग मिला।

प्रेमचंद जी ने 'हंस' का प्रकाशन 10 मार्च 1930 ई. में काशी से देश प्रेम, साहित्यिक अभिरुचि एवं साहित्य सेवा की भावना से प्रेरित था। तत्कालीन लेखकों द्वारा भारतीय स्वाधीनता और साहित्य का संदेश देता था। वैसे तो 'हंस' विभिन्न विषय सम्पन्न कहानियों का मासिक पत्र था लेकिन प्रेमचंद ने राष्ट्र की अस्मिता और राष्ट्रीय आंदोलन का मुखपत्र बना दिया। 'हंस' ने परम्परा से प्राप्त योग्यता के बल पर हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में युग विधायक कार्य किया जो अब तक प्रकाशित मासिक पत्रों द्वारा संभव नहीं हो सका। 'हंस' के प्रकाशित विशेषांक हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। जो किसी अन्य पत्र-पत्रिका ने नहीं किया। 1986 ई. में राजेंद्र यादव ने इसी तथ्य को स्वीकारते हुए 'हंस' का पुनर्प्रकाशन किया। राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' का उतना ही महत्व हैं जितना प्रेमचंद के 'हंस' का। दोनों ने युगीन समस्याओं को समझने और उनका समाधान ढूंढने का प्रयास किया है। प्रेमचंद जी अंग्रेज सत्ताधारियों के ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी सत्ताधारियों के सामने भी अपनी कलम झुकाने के लिए तैयार न थे। समझौते की जरा-सी भी गंध प्रेमचंद में न थी और न ही राजेंद्र यादव

में। सही बात को डंके की चोट पर कहना राजेंद्र यादव की विशेषता थी। शायद वह अच्छी तरह जानते थे कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं। इसी वजह से वे नये-नये विवादों से घिरे रहते थे।

हिंदी के जाने-माने साहित्यकार राजेंद्र यादव का सारा जीवन और लेखन उनके लिए व्यक्तिगत युद्ध क्षेत्र है। इस युद्ध क्षेत्र में अकेले लड़ना और जीत हासिल करना उनका लक्ष्य है। अतः यह लड़ाई उन्होंने कहानीकार, उपन्यासकार, कवि, समीक्षक, अनुवादक, पत्रकार संपादक के रूप में लड़ी। राजेन्द्र यादव अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता, परिवेश-संगत व्यक्ति-चित्रण एवं अनुभव की प्रमाणिकता के कारण आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की यथार्थवादी परंपरा के महान लेखक बन गए। परिवेशबोध की विकसित चेतना और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण उनकी सभी रचनाएं विशिष्ट बन गई। नई पीढ़ी के यथार्थवादी कथाकार राजेन्द्र यादव प्रेमचंद के कृतित्व एवं परंपरा को सामाजिक यथार्थ की प्रेरणा ग्रहण कर, एक सजग समस्यामूलक कथाकार होने के नाते उन्होंने युगजीवन को उसके सारे अंतर्विरोधों के साथ बड़ी बारीकी से परखते हुए अपने कृतित्व को प्रस्तुत किया।राजेन्द्र यादव की कहानियों एवं उपन्यासों में उनके निजी जीवन के विविध पक्षों के अक्षुण्ण प्रभाव देखा जा सकता है।

नई कहानी के प्रमुख सूत्रधारों में से एक राजेंद्र यादव ने अपनी कहानियों में समस्या और मनोविश्लेषण को अपनाते हुए भी व्यक्ति और उसके परिवेश की उपेक्षा नहीं होने दी। परिवेश बोध की विकसित चेतना और उत्कृष्ट अनुभव की प्रामाणिकता के कारण राजेंद्र यादव ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। समस्याओं के माध्यम से व्यक्ति का चित्रण उन्हें नामंजूर है। व्यक्ति के माध्यम से ही समस्या को देखना सही देखना मानते है। राजेंद्र यादव की कहानियां शोषित समाज का प्रतिनिधित्व करती है। निम्न, मध्यवर्ग, उनके कथात्मक साहित्य का मैदान रहा है। आलोचनात्मक साहित्य में भी उनकी अपनी खास पहचान बनाते हुए अपने संपादन कार्य से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

राजेन्द्र यादव द्वारा सन् 1986 में 'हंस' के पुनर्प्रकाशन का अर्थ जड़ होती जनवादी चेतना को उत्तर आधुनिकता के परिवेश में चैतन्य देना था। राजेन्द्र यादव अपने संपादकीय शीर्षक 'मेरी-तेरी उसकी बात' में प्रत्येक क्षेत्र पर टिप्पणी की है। सामाजिक, धार्मिक, राजकीय, लेखकीय आदि स्तरों पर उन्होंने दूध का दूध और पानी का पानी किया है।

'हंस' पत्रिका परिवर्तित होती हुई चेतना का प्रतिफलन किस प्रकार कर रही है, इसका प्रमाण 'हंस' के अंकों को देखकर मिलता है। साहित्यिक और साहित्य के बाहर के विषय को अपने में समेटने वाले 'हंस' की रचनात्मकता विद्रोही प्रवृत्ति युगीन समस्याओं से जुड़कर अधिक साकार हुई है। 'हंस' की सबसे बड़ी उपलब्धि भारतीय समाज में हाशिए पर फेंके गए स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक आदि को मंच उपलब्ध करवाया। ये लोग समाज में अपनी बात अपनी तरह से कर रहे हैं।

राजेन्द्र जी ने युगीन एवं सामाजिक परिवेश को अपने साहित्य में प्रतिबिंबित किए है। साहित्य का उनके जीवन से गहरा संबंध है। साहित्य स्वयं को उद्‌घाटित करने की प्रक्रिया है जो अपने समाज एवं परिवेश में घटित होती है। राजेन्द्र जी कहते हैं कि साहित्यकार औरों के बहाने अपनी ही बात करते हैं। वे 'हंस' में उन्हीं कहानियों को मौका देते थे जो जीवन के अति निकट है।

कहानियों की मासिक पत्रिका 'हंस' ने 'नई कहानी' को खूब सजा-संवारकर उसे नया रूप देकर भाषायी स्तर पर अत्याधुनिकता का बोध कराकर, आने वाले कथाकारों की लेखनी के लिए एक नई सड़क तैयार की है। 'सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'शह और मात', 'कुलटा', 'अनदेखे अनजाने पल' व ,'मन्त्रविद्ध' जैसे उपन्यास हों या 'देवताओं की मूर्तियां', 'खेल खिलौने', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'टूटना', 'ढोल' व 'वहाँ पहुँचने की दौड़' जैसे अनेक कहानी संग्रह और कई कहानियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में एक नया आयाम लाने का श्रेय भी राजेंद्र जी को जाता है।

'एक दुनिया : समानांतर', 'कहानी : स्वरूप और संवेदना', 'कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति', 'उपन्यास : स्वरूप और संवेदना', 'औरों के बहाने' या 'काँटे की बात' के अनेक खण्ड, जब भी छपा प्रायः चर्चित ही रहें। उनकी कहानी 'जहां लक्ष्मी कैद है' में बूढ़ी

होती हुई जवान बेटी की आंतरिक पीड़ा का एक मार्मिक दस्तावेज है। उनके लेखन का सीधा असर सीधे-सीधे चल कर भीतर तक प्रवेश कर लेता है।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में कथानक प्रायः आधुनिक यथार्थ से जुड़े हैं। अतः वे जीवन से भी जुड़े हैं। उनके कथानक जीवन संघर्ष और विषमताओं के चित्र उतारने में बेजोड़ हैं। साथ ही अधिकतर कहानियां नारी की करुण स्थिति से है। परिणामतः ये कहानियां कहीं तो धार्मिक, कहीं सामाजिक और कहीं नैतिक बंधन तोड़ती भी दिखाई देती है। इनकी कहानियों में कहीं विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त शोषण के प्रति अत्यधिक आक्रोश है और उसका व्यंगात्मक रूप में पर्दाफाश किया गया है। इनकी कहानियां संबंधों में टूटन, अजनबीपन, फालतू होने का बोध, तनाव जैसी विषम स्थितियां और सामाजिक विकृतियों का भी विश्लेषण दिखाई देता हैं।

साहित्यिक पत्रिका के योगदान की कसौटी यह है कि राजेन्द्र जी ने कितने नए रचनाकारों, लेखकों को प्रतिष्ठित किया। 'हंस' इस क्षेत्र में अन्य पत्रिकाओं के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकता है। मैत्रेयी पुष्पा, अर्चना वर्मा, शिवमूर्ति, संजीव, सृंजय, उदय प्रकाश, काशीनाथ सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, अजय नरवरिया आदि अनेकों नाम हैं।

राजेन्द्र यादव ने लगभग तीन दशक तक 'हंस' में लगातार किसी न किसी समस्या को लेकर विशेषांक के रूप में आधुनिक संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश किया हैं। इसी कारण राजेंद्र जी को हिंदी साहित्य में स्त्री, दलित, मुसलमान एवं आदिवासी आदि महत्वपूर्ण विषय को, हिंदी साहित्य के केंद्र में लाने का श्रेय दिया जाता है। राजेंद्र जी लगातार 'हंस' के विशेषांकों के माध्यम से स्त्री, दलित, मुसलमान एवं आदिवासियों के अधिकारों को बढ़ावा देने की बात करते थे। राजेन्द्र जी ने 'हंस' में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषांक निकाला -

1. औरत : उत्तरकथा 1994
2. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य 2000
3. स्त्री-भूमंडलीकरण : पितृ-सत्ता के नए रूप 2001

4. भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य 2003
5. सत्ता विमर्श और दलित 2004
6. स्त्री विमर्श : अगला दौर 2009
7. नवसंचार के जनाचार 2018
8. दलित (प्रतिरोध।अधिकार।समता) खण्ड एक 2019
9. दलित (प्रतिरोध।अधिकार।समता) खण्ड दो 2019

हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम 'हंस' के माध्यम से स्त्री विशेषांक, स्त्री विमर्श, स्त्री लेखन, दलित विशेषांक, अल्पसंख्यक विशेषांक, आदिवासी विशेषांक की परंपरा शुरू हुई जो आज तक जारी है। इसका श्रेय 'हंस' और राजेंद्र यादव को जाता है। समसामयिक चेतना और आधुनिक भावबोध इस विशेषांक के रचना परिवेश में निर्मित रचनाओं में गहराई से उभरा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि -

- हिंदी पत्रकारिता के कारण साहित्यिक क्षेत्र में नए-नए विधाओं का निर्माण हुआ है।
- आधुनिक काल में मुद्रण तकनीक के विकास के कारण साहित्य के क्षेत्र में नया आयाम स्थापित हुआ।
- प्रेमचंद जी के 'हंस' पत्रिका की सबसे बड़ी उपलब्धि विशेषांकों की शुरुआत और विभिन्न विधाओं के विकास को गति प्रदान करना।
- राजेन्द्र यादव हिंदी के सबसे विवादास्पद पत्रकार है। उनका जीवन सकारात्मकता और नकारात्मकता के कारण हमेशा चर्चा का विषय रहा है।
- राजेन्द्र यादव सार्थक और प्रासंगिक लेखन के साथ-साथ 'लेखकीय स्वतंत्रता' को अधिक महत्व देते थे।
- राजेन्द्र यादव का संपादकीय सामाजिक, धार्मिक, जातीयता, भ्रष्ट तंत्र में परिवर्तन की मांग करता है।
- राजेंद्र यादव अपने लेखन के जरिए परम्परा, रूढ़ि, आडम्बर पर कड़ा प्रहार किए।

- राजेन्द्र यादव हर बात को डंके की चोट पर कहते थे चाहे जो भी क्षेत्र हो।
- 'हंस' विशेषांकों के माध्यम से नवलेखन तथा नवलेखक को प्रोत्साहित किया।
- हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली बार 'स्त्री-विमर्श' सम्पूर्ण हिंदी जगत का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।
- भूमंडलीकरण ने आधुनिकीकरण को महिला मुक्ति की परियोजना से पृथक किया।
- स्त्री-भूमंडलीकरण ने स्त्री-मुक्ति के नाम पर बाज़ार में उसकी देह का प्रदर्शन कर रहा है। इसका अहसास 'हंस' ने कराया।
- 'हंस' स्त्री में आत्मविश्वास पैदा करने में सफल रहा।
- 'दलित' के खिलाफ विकसित हुई संकुचित मानसिकता को 'हंस' ने व्यापक दृष्टिकोण दिया।
- 'हंस' दलितों में चेतना व विश्वास विकसित किया।
- हिंदी साहित्य में पहली बार 'हंस' ने अल्पसंख्यकों का ढाढस बढाया। अल्पसंख्यकों के वर्तमान और भविष्य की चिंता 'हंस' ने प्रकट की।
- 'हंस' के नये-नये प्रयोग पाठकों को उस विषय पर सोचने को मजबूर करते हैं।
- प्रगतिशीलता के आग्रही राजेंद्र यादव ने 'हंस' के प्रत्येक स्तम्भ में जनवादी चेतना विकसित की।
- 'हंस' के प्रत्येक रचनाकार ने जीवन को सामानांतर रख कर सत्य की सर्जना की है।
- 'हंस' सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका होते हुए भी नई पीढ़ी के रचनाकारों को प्रोत्साहित किया।

*****